Seventeenth Loksabha

an>

Title: Need to Promote Sports in India

माननीय सभापति : माननीय सदस्यगण, नियम 193 के अधीन एक चर्चा अभी शेष है। उस पर अभी चर्चा होनी है।

डॉ. निशिकांत दुबे जी ।

… (व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा): अभी चर्चा होना शेष है। चर्चा अभी पूरी नहीं हुई है। चर्चा अभी बाकी है। … (व्यवधान)

माननीय सभापति: चर्चा अभी बाकी है। वह पिछले सत्र से चल रही है।

… (व्यवधान)

माननीय सभापति: दानिश जी, अगर आपको बोलना है तो आप नाम दे सकते हैं।

डॉ. निशिकांत दुबे : सभापति महोदय, हम सभी लोग माननीय लोक सभा अध्यक्ष जी के शुक्रगुज़ार हैं कि उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में ये बातें कही थीं कि लोगों को खेल की चर्चा में आना है। एक दिन कई एक प्रश्न थे, तो उन्होंने एक व्यवस्था दी थी कि हम नियम 193 में इस पर चर्चा करेंगे। अच्छी बात यह है कि लोक सभा अब स्पोर्ट्स के बारे में भी इतनी चिंतित है। कई एक सांसद बोल चुके हैं, कई एक सांसद बोलने वाले हैं।…(व्यवधान) मैं पहली बार बोल रहा हूं। इसमें एक नियम है कि यदि आप एक बार बोल लेते हैं, तो आपको दोबारा मौका नहीं मिलता है। इसीलिए मुझे चेयर और मेरी पार्टी ने बोलने की अनुमति दी है।

महोदय, पहले एक कहावत थी, जिसको सुनते हुए हम सभी लोग बड़े हुए हैं। हमसे जो छोटा जेनरेशन है, वह इन चीजों को सुनते हुए नहीं बड़ा हुआ, लेकिन हम लोग हुए हैं कि 'पढ़ोगे- लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे होगे खराब'। आज पूरी दुनिया बदल गई है। देश का जो माइंडसेट है, आज़ादी के बाद का जो हमारा युवा है, वह कितना बदला होगा और इस सरकार की सोच कितनी बदली होगी, वह यह

दिखाता है। यदि आपको ध्यान हो तो उस दिन राज्यवर्धन राठौर जी बोल रहे थे, वे खेल मंत्री भी रहे, आई एंड बी मिनिस्टर भी रहे, एक बड़े खिलाड़ी रहे, जो कि मेडल जीतकर लाए थे। उन्होंने खुलेआम इस पार्लियामेंट में एक सांसद के प्रश्न के जवाब में बोलते हुए कहा कि मैं वर्ष 2002 में इस देश के लिए मेडल जीतकर लाया था। उस जमाने में यह बड़ी बात थी, लेकिन आप वर्ष 2002 से लेकर वर्ष 2014 तक मेरा एक भी फोटोग्राफ इस देश के प्रधानमंत्री जी के साथ दिखा दीजिए। वह इस सदन में बोल रहे थे, लेकिन आज क्या सिचुएशन है।

कौन-सा खिलाड़ी जा रहा है, जाते हुए उनसे प्रधानमंत्री जी मिलते हैं और बात करते हैं। यदि खिलाड़ी मेडल लाता या जीतता है, देश का नाम रोशन करता है, यदि नहीं भी जीतता है, तो भी उसको प्रोत्साहित करते हैं। यदि उनको कोई रोता हुआ दिखाई देता है, यदि लगता है कि किसी कारणवश छोटी सी चूक हो गई, तो एक गार्जियन की तरह, देश का मुखिया होने के नाते और एक अभिभावक होने के नाते, वे उस खिलाड़ी को बधाई भी देते हैं और उस खिलाड़ी को सांत्वना भी देते हैं। जब वे लौटकर आते हैं, केवल ये नहीं है कि जो ओलंपिक में जा रहे हैं, जो कॉमनवेल्थ में जा रहे हैं, वर्ल्ड में जा रहे हैं, यहां तक कि जो हमारे दिव्यांगबंधु हैं, यदि वे पैरालंपिक में जा रहे हैं, तो उनको भी वही सुविधा है। वे एक-एक चीज का ख्याल रखते हैं। ये हमारी सरकार का कमिटमेंट दिखाता है, ये माननीय प्रधानमंत्री जी का कमिटमेंट दिखाता है, ये दिखाता है कि देश स्पोर्ट्स के बारे में किस तरह से चेंज हुआ है, किस तरह से पूरे देश की सोच बदली है। जो सिचुएशन है, स्पोर्ट्स के ऊपर माननीय प्रधानमंत्री जी या देश क्यों सोचता है?

महोदय, मेरे भी बच्चे छोटे हैं, अभी वे पढ़ ही रहे हैं। दुनिया का जो वातावरण है, उस वातावरण में आपको स्वस्थ मानसिकता के बच्चे चाहिए। वह मानसिकता तब होती है, केवल माल- न्यूट्रिशन या इन चीजों से कि आपने उनको अच्छा खाना-पीना खिला दिया, उससे नहीं होता है। आज का जो समय है, दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, भारत फिर भी काफी हद तक बचा हुआ है। कुछ बच्चे ड्रग्स के शिकार हो जाते हैं, कुछ बच्चे एल्कोहल के शिकार हो जाते हैं, कुछ बच्चों में विकार आ जाता है कि वे लड़ाई-झगड़ा, मारपीट, गुंडागर्दी पर उतारू हो जाते हैं, उनको बचाने के लिए स्पोर्ट्स सबसे बढ़िया तरीका है।

सभापति महोदय, जब माननीय जगजीवन राम जी उप-प्रधानमंत्री होने के नाते हमारे भागलपुर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में गए थे, तब उन्होंने एक बड़ी अच्छी बात कही थी, उन्होंने कहा था कि 12 वर्ष की आयु से लेकर 18-19 वर्ष का जो समय है, ये शुद्ध युवा का समय है, यूथ का समय है। जितने बच्चे हैं, उनको मेढ़ तोड़कर चलना है, जो मेढ़ तोड़कर नहीं चलते हैं, तो उनके बारे में सोचने की आवश्यकता है कि ये बच्चे युवा हैं कि नहीं हैं। वे दुनिया से अलग हटकर काम करना चाहते हैं। जब तक आप उनको एक पॉजिटिव-वे में देश के प्रति नहीं जोड़ेंगे, अपने समाज के प्रति नहीं जोड़ेंगे, उनको अपने समाज के प्रति क्या करना है, यदि उनकी आवश्यकताओं को उस तरह से नहीं मोड़ेंगे, तो इस देश में केऑस हो जाएगा।

इसीलिए स्पोर्ट्स की आवश्यकता पड़ती है। उस समय उन बच्चों की एनर्जी इतनी हाई होती है कि अगर आप उस समय किसी बच्चे को फुटबॉल खेलने में, किसी को खो-खो खेलने में, किसी को कबड्डी खेलने में, किसी को बैडमिन्टन खेलने में या किसी को टेनिस खेलने में लगा देते हैं तो बच्चे प्रतिस्पर्धा करते हैं। उनको एक-दूसरे से हार और जीत का सुकून होता है। वे हारने पर दुखी होते हैं तो जीतने पर खुश होते हैं, लेकिन हार और जीत एक-दूसरे से दुश्मनी करने में नहीं बदलती है। जब इस तरह से हारने और जीतने का मानसिक प्रभाव बच्चों के शरीर पर पड़ता है, उनके दिमाग पर पड़ता है तो वे स्वस्थ बच्चे भविष्य में देश की ताकत बनते हैं।

चूँकि ऐसा नहीं है कि वे मैडल ही जीतें, ऐसा भी जरूरी नहीं है कि वे देश के लिए खेलें, ऐसा भी जरूरी नहीं है कि वे यूनिवर्सिटी के लिए खेलें, लेकिन जब वे अपनी एनर्जी को फील्ड में एग्जॉस्ट करते हैं तो उनकी जो ताकत होती है, वह देश की ताकत बनती है और हम जो 5 ट्रिलियन या 10 ट्रिलियन इकोनॉमी की बातें करते हैं, उसमें उस ताकत की आवश्यकता होती है।

इस कारण से ही आज यहां पर डिस्कशन हो रहा है। यह सबसे महत्वपूर्ण बात है, लेकिन मैं आज कुछ समस्याएं देख पा रहा हूँ। मैं अखबारों के माध्यम से पढ़ता हूँ, सांसद होने के नाते जो प्रश्न होते हैं या लोगों से जो जानकारियां मिलती हैं, उसके हिसाब से हमारे देश में जो सबसे बड़ा सवाल है, वह यह है कि फेडरेशन का जो खेल है, वह सरकार की सीमा से बाहर है। फेडरेशन पर सरकार का कोई कंट्रोल नहीं है। उस फेडरेशन में कौन मैम्बर बनेगा, कौन अध्यक्ष होगा, कौन उपाध्यक्ष होगा और वह फेडरेशन किस आधार पर खिलाड़ियों का सलेक्शन करता है, यह भी सरकार की

सीमा के बाहर है। उनका फाइनेंस कहां से आता है तथा उनका मैनेजमेंट कैसे होता है? यहां पर मंत्री जी बैठे हुए हैं। मंत्री जी जवाब देते हुए मुझे इसके बारे में ज्ञान देंगे।

इस सिचुएशन के लिए कई बार प्रयास हुए हैं। चूँकि हम छोटी जगह से आते हैं, ऐसी जगह से आते हैं, जहां बच्चों के लिए ज्यादा सुविधाएं नहीं हैं। वे अमीर बाप के बच्चे नहीं हैं। चाहे क्रिकेट का सवाल हो, हम चाहे महेन्द्र सिंह धोनी से लेकर सचिन तेंदुलकर तक की बात कर लें तो मैं कहना चाहता हूँ कि छोटे-छोटे परिवारों से लोग निकले और उन्होंने देश के लिए काम किया।

सभापति जी, मैं जहां से आता हूँ, वहां आप समझिए कि हॉकी में झारखण्ड के जो बच्चे हैं, वे लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। आर्चरी में लगातार बच्चे आगे बढ़ते रहे हैं, लेकिन कई बार खबर आती है, चूँकि आज फिर ये बातें होंगी कि एक फेडरेशन का सब्जेक्ट है और एक स्टेट का सब्जेक्ट है। इस पार्लियामेंट में हमेशा दो बाते होती हैं कि आप जो कह रहे हैं, वह फेडरेशन का सवाल है या आप जिस स्पोर्ट के लिए कह रहे हैं, वह स्टेट का सब्जेक्ट है। यह हम और आप कानून बनाने वाले समझ सकते हैं, लेकिन जो बच्चे खेल रहे हैं, उनके मन में तो एक आशा है, आकांक्षा है, उत्साह है कि वे इस देश के लिए खेलें।

उन बच्चों के पास न तो अच्छा हॉकी स्टिक है, न अच्छे जूते हैं। झारखण्ड से खबरें आती रहती हैं। हरियाणा जैसा स्टेट तो बहुत काम करता है। गुजरात जैसा स्टेट बहुत काम करता है, क्योंकि उसके पास पैसे हैं, वह पैसे दे रहा है, लेकिन हमारा जैसा राज्य यदि बच्चों के लिए पैसे नहीं दे रहा तो वह जो टैलेंट है, उस टैलेंट का क्या होगा? इवन, हमारे यहां पर स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के कई ऑर्गेनाइजेशन्स हैं। हजारीबाग में है और एकाध जगहों पर इन्होंने हॉकी के इंस्टिटयूट्स बना रखे हैं। उसके अलावा टैलेंट को कैसे अपने साथ रखे, उनको हम कैसे सुविधा दें, यह झारखण्ड जैसे राज्य में नहीं है। यदि यह सब सरकार नहीं करेगी, फेडरेशन नहीं करेगा तो हम यहां से क्या करने वाले हैं? यदि इसका जवाब मिलेगा तो मुझे लगता है कि यह उन बच्चों के लिए बहुत लाभदायक होगा।

दूसरा सवाल यह है कि भारत सरकार के पास कितना बजट है? हमने बजट को बढ़ाया है। वर्ष 2014 तक तो स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री का मतलब 100 करोड़, 150 करोड़, 200 करोड़ होता था। इसके बाद स्पोर्ट्स और यूथ मिनिस्ट्री का कोई मतलब ही नहीं होता था।

17.00 hrs

यहां तक कि जो यूथ हॉस्टल जैसे आर्गनाइजेशन थे, जो चाणक्या पुरी में है, उस पर भी केवल लिखा रहता है कि यह भारत सरकार की मदद से बना हुआ है, लेकिन उस यूथ हॉस्टल की जो पोजिशनिंग है, रखरखाव या मैनेजमेंट है, उसमें भी मिनिस्ट्री ऑफ यूथ का कोई लेना-देना नहीं है। यदि आप दोनों को जोड़ेंगे तो केन्द्र सरकार जो सपोर्ट बेस क्रिएट करती है फेडरेशन के लिए, केन्द्र सरकार सपोर्ट बेस क्रिएट करती है कि ओलम्पिक में तैयारी करने के लिए हम किस तरह के इक्विपमेंट्स दें, किस तरह की सुविधा दें, जिससे बच्चे आगे बढ़ें, कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए जो बच्चे जाएंगे, उनको कैसे सुविधा दें। हमको लगता है कि प्रत्येक चार साल पर खेल होता है, लेकिन सबका जो कैलेण्डर है, मुझे लगता है कि साल-दो साल में कोई न कोई अच्छा खेल आता है, एशियन गेम्स आ जाता है, कॉमनवेल्थ गेम्स आते हैं, ओलम्पिक और वर्ल्ड कप आ जाता है। इनके बाद नेशनल गेम्स हैं, जिनमें स्टेट्स पार्टिसिपेट करती हैं, उससे नीचे यूनिवर्सिटी के गेम्स होते हैं। यह जो कैलेण्डर है, इसमें हम साल भर किस तरह स्टेट के कोच को अपने साथ रखते हैं, प्राइवेट कोच को अपने साथ रखते हैं, केन्द्र के कोच को अपने साथ रखते हैं, केन्द्र के इंस्टीट्यूट का क्या रोल होता है, फेडरेशन के इंस्टीट्यूट का क्या रोल होता है और स्टेट के कोच या फेडरेशन का क्या रोल होता है, इनके बारे में कोई क्लैरिटी नहीं है। यदि यह क्लैरिटी नहीं होगी तो हम पैसा कुछ भी खर्च करते रहें, उस दिन हम प्रश्न में बहुत चर्चा करते हुए कह रहे थे कि इतना दिन हो गया, हमने ये 10 पदक लिये, 13 पदक लिये, हमने 14 पदक लिये। मैं आपको बताना चाहूंगा कि इस बार माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रयासों के कारण हमने ओलम्पिक में भी बहुत अच्छी संख्या में पदक लिये और हम पैराओलम्पिक में भी बहुत अच्छा करके आए। अभी जो कॉमनवेल्थ गेम्स चल रहा है, उसमें लगातार हमारे बच्चे-बच्चियां गोल्ड, सिल्वर और ब्रोंज मेडल्स जीत रहे हैं, भारत का नाम बहुत आगे बढ़ा रहे हैं, लेकिन यह जो क्लैरिटी नहीं है, उसकी वजह से जब मेडल्स की टैली आती है, उसमें 130 करोड़ लोगों का यह देश पीछे रह जाता है। ठीक है, लिगेसी प्राब्लम है, 70 साल से हमने जिस तरह का भ्रष्टाचार देखा है और सारी चीजों में भ्रष्टाचार देखा है, वह अभी नेहरू स्टेडियम बनते हुए नजर आया था। मैं अनुराग सिंह ठाकुर जी का धर्मशाला का स्टेडियम देखने के लिए गया, वहां 50 करोड़ रुपये में उन्होंने खूबसूरत स्टेडियम बनवाया है। यदि किसी को देखना हो, मुझे वहां खेलने का भी मौका मिला है और संसद की टीम का मैनेजर होने के नाते, एक प्लेयर होने के नाते मैं वहां खेलता रहा हूं।

50 करोड़ रुपये में एक खूबसूरत स्टेडियम धर्मशाला में बना है। अगर आप देखेंगे तो 1100 करोड़ रुपये या 1200 करोड़ रुपये खर्च करके हमने कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए यहां नेहरू स्टेडियम बनाया है। इतना बड़ा करप्शन होता रहा है।

पीएसी का मेंबर होने के नाते मैंने सीडब्ल्यूजी की पूरी फाइलें खंगाली हैं कि किस तरह से एक मंत्री ने कह दिया कि हमें कॉमनवेल्थ गेम्स करना ही नहीं है और अन्त में जब दो साल बचे, तब यह कहा गया कि हमें वारफूटिंग पर काम करना है, हमें यह गेम करना ही है, इस तरह से सारी जगहों पर करप्शन करके, हम कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए जो इंफ्रास्ट्रक्चर क्रिएट कर सकते थे, जो एशियन गेम्स का बेस हो सकता था, जो ओलम्पिक्स का बेस हो सकता था, उन चीजों से हम महरूम हो गए। मेरा यह कहना है कि अंतिम समय में हम जो काम करते हैं, क्या हम एक ऐसा कैलेण्डर बना सकते हैं, जिसमें फेडरेशन को क्या काम करना है, स्टेट को क्या काम करना है, सेंटर को क्या काम करना है। मैं फिर माननीय प्रधानमंत्री जी, माननीय मंत्री जी और आप सभी को बधाई देना चाहता हूं कि आप यहां वर्ल्ड चेस ओलम्पिक कराने में सक्सेसफुल हुए, जिसका उद्घाटन करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी गए। इस तरह की जो अपॉर्चुनिटी आपको मिल रही है, फुटबॉल में भी एक नई अपॉर्चुनिटी आपको मिलने वाली है, तो उसमें हम कहां-कहां इंफ्रास्ट्रक्चर क्रिएट करें। यह केवल दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बैंगलूरू में है, क्योंकि आपके खिलाड़ी शहरी क्षेत्र से ज्यादा हैं। मैं एक चीज को हमेशा मानता हूं कि यदि पेट में भूख नहीं हो और मन में आग नहीं हो तो कोई आदमी आगे नहीं बढ़ सकता। मैं यह नहीं कह रहा हूं बड़े परिवारों के बच्चे आगे नहीं बढ़ते हैं, बढ़ते हैं, लेकिन मैक्सिमम लोग, पूरी दुनिया में ऐसे उदाहरण हैं कि चाहे बिल गेट्स बढ़ते हुए नजर आएं, चाहे यहां धीरूभाई अम्बानी बढ़ते हुए नजर आएं, चाहे डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम साहब राष्ट्रपति बनते हुए नजर आएं या माननीय प्रधानमंत्री जी चाय बेचते हुए यहां देश के प्रधानमंत्री बनते हुए नजर आएं, जिस आदमी के पेट में भूख होगी, वह आगे बढ़ता है। विद्यार्थी के लिए यह हमेशा कहा भी गया है, चाहे कोई भी खिलाड़ी हो या हम जो लोग यहां आते हैं, विद्यार्थियों के लिए एक बहुत अच्छा श्लोक है। सभापति महोदय, आपको भी ध्यान होगा :

"काक चेष्टा, बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च ।

अल्पाहारी, गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम्॥"

किसी में ये पांच लक्षण हों, जिसमें कौवे की तरह चेष्टा हो, जिसमें बगुले की तरह ध्यान हो, जिसमें कुत्ते की तरह निद्रा हो, जो अल्पाहारी हो, जो ग्रहत्यागी हो, वही विद्यार्थी होता है और वही विद्यार्थी सक्सेसफुल होता है, जीवन में वही लोग आगे बढ़ते हैं। इसलिए पेट की भूख का मतलब गरीबी से नहीं है, पेट की भूख का मतलब है कि उसमें बढ़ने की क्षमता है, उसमें देश के लिए कुछ कर गुजरने का सामर्थ्य है।

इसी कारण से आज हमने जो तिरंगा यात्रा की, उसमें भी यही था कि उन लोगों ने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, जिनको किसी चीज की इच्छा और आकांक्षा नहीं थी। उनमें केवल यह था कि अंग्रेजों को भारत से निकालना है और इस देश को स्वतंत्र और आजाद करना है।

सभापति महोदय, मेरा यह कहना है कि छोटी-छोटी जगहों से जो बच्चे आते हैं, जिनमें टैलेंट है, उस टैलेंट पूल के लिए क्या हम कोई ऐसी पॉलिसी बना सकते हैं, जैसे हम झारखण्ड से आते हैं तो वहां हॉकी में पुरुष और महिला के लिए काम कर सकते हैं।

हमारा आर्चरी विषय होता है या हरियाणा में पहलवान होते हैं, मुक्केबाजी में नार्थ-ईस्ट के लोग होते हैं। जैसे आज रेलवे के लिए स्पेसिफिक गति शक्ति विश्वविद्यालय बना, उसी तरह से मणिपुर में स्पोर्ट्स युनिवर्सिटी बनाई गई है।

यह ठीक है कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने बहुत कुछ किया है, लेकिन अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, जिससे हम देश-दुनिया में अपने आपको कैसे अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, रूस इन सभी से मुकाबला कर पाएं, खासकर चीन से, क्योंकि सबसे ज्यादा थ्रेट सभी खेलों में चीन से ही नजर आता है। हमें 130-135 करोड़ के देश में अच्छे खिलाड़ी पैदा करने हैं, वर्ल्ड क्लास के खिलाड़ी पैदा करने हैं और एक ऐसी सिचुएशन लानी है, जिसमें भारत नंबर वन हो।

महोदय, जिस तरह से हम इकोनॉमी में आगे बढ़ने की बात कर रहे हैं और यदि ऐसा समय आया तो पांच, दस, पन्द्रह साल के बाद हम दुनिया के विश्व गुरू बनेंगे। इकोनॉमी में माननीय निर्मला सीतारमण जी ने माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में जो किया है, वे निश्चित तौर पर बधाई के पात्र हैं। क्या स्पोर्ट्स में कोई लॉन्ग टर्म पॉलिसी लेकर आ सकते हैं और कैसे प्राइवेट फण्डिंग के साथ सरकार की फण्डिंग आगे बढ़ा

सकते हैं? यदि इस सोच के बारे में हम आगे बढ़ें तो हम बहुत कुछ कर सकते हैं। आपने मुझे बोलने के लिए वक्त दिया, इन्हीं शब्दों के साथ जय हिन्द, जय भारत।

कुंवर दानिश अली (अमरोहा) : सभापति महोदय, धन्यवाद, क्योंकि आपने मुझे नियम 193 पर खेल और युवा मंत्रालय के मामले पर हो रही चर्चा में भाग लेने का मौका दिया। अभी मुझसे पहले वरिष्ठ साथी निशिकांत दुबे जी ने बहुत अच्छी बातें की हैं कि किस तरीके से हमें खेलों को आगे बढ़ाना चाहिए।

महोदय, यह सच्चाई है कि इस देश में जो फेडरेशन का रोल है और सरकार का रोल है, उसमें कई जगह कंट्राडिक्शन्स हैं। मुझे यह कहने में कोई गुरेज नहीं है कि नेपोटिज्म कई सारी फेडरेशन्स में है। यह रिकॉर्ड पर है। सुप्रीम कोर्ट तक में ये मामले गए, लेकिन उसका कोई हल नहीं निकला है। एक तरीके से फेडरेशन्स के ऊपर जो लोग बैठे हैं, हम काफी समय से रिफॉर्म्स की बात सुनते आ रहे हैं, लेकिन कितना हुआ, कितना हो पाएगा, मुझे नहीं मालूम है। लेकिन यह बात हकीकत है कि देहात, गांव, ग्रामीण आंचलों से जो लोग आते हैं, उनके अंदर प्रतिभा कहीं ज्यादा होती है। मैं यह रिकॉर्ड पर कह रहा हूं कि फेडरेशन्स के अंदर जो नेपोटिज्म है, अगर उसको न्यूट्रलाइज करके जितनी सुविधाएं एक सेक्शन को दी जाती हैं, उनके बच्चों को दी जाती हैं, अगर उसकी एक चौथाई सुविधाएं उन गांव, देहात के नौजवानों को दे दी जाएं तो मैं समझता हूं कि भारत का ओलम्पिक्स और कॉमनवेल्थ गेम्स में जो रिकॉर्ड होगा, वह कई गुना बढ़ जाएगा।

उन्होंने बहुत अच्छी बात कही है कि आज सरकार की तरफ से आयोजन किया गया, आजादी के इस अमृत महोत्सव के उपलक्ष में तिरंगा यात्रा निकाली गई। मुझे इस बात की खुशी है कि जिन्होंने आजादी की स्वर्ण जयंती पर, जो गोल्डन जुबली सेलेब्रेट हो रही थी, उस वक्त अपने मुख्यालय पर तिरंगा नहीं फहराया था, कम से कम आजादी के अमृत महोत्सव पर, …*…(व्यवधान)

माननीय सभापति : आरएसएस की बात कार्यवाही में नहीं जाएगी।

…(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप विषय पर बोलिए।

…(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : महोदय, आजादी के अमृत महोत्सव पर कम से कम तिरंगा फहराया जाएगा।...(व्यवधान)

डॉ. निशिकांत दुबे : सभापति महोदय, यह गलत बोल रहे हैं।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय मंत्री जी कुछ कह रहे हैं।

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संस्कृति मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अर्जुन राम मेघवाल): सभापति महोदय, माननीय सदस्य को चर्चा करते समय, कोई ऐसे संगठन का नाम नहीं लेना चाहिए, जिसका यहां कोई रिलेशन नहीं है। ये लगातार ऐसे संगठन का नाम ले रहे हैं, जो राष्ट्र भक्त संगठन है, जो देश भक्त संगठन है।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : नहीं, नहीं, उसको कार्यवाही से निकाल दीजिएगा।

... (<u>व्यवधान</u>)

माननीय सभापति : आप ऐसा नहीं कीजिए।

...(<u>व्यवधान</u>)

श्री अर्जुन राम मेघवाल : खेल पर चर्चा हो रही है, तो ये ऐसा नाम क्यों ले रहे हैं?...(व्यवधान) यह इरेवेलेंट टॉक है। इसको कार्यवाही से निकालिए।...(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : सभापति महोदय, मैं अपनी बात कर रहा हूं।...(व्यवधान)

श्री अर्जुन राम मेघवाल : सभापति महोदय, इरेवेलेंट टॉक को रिकॉर्ड से हटाइए।... (व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : महोदय, मुझे अपनी बात कहने दीजिए। मैंने क्या गलत कहा है?... (व्यवधान) उस संगठन से प्रधान मंत्री जी जुड़ कर आए हैं। उस संगठन से मेजॉरिटी इस सदन के अंदर बैठी **है।** मैंने क्या गलत कह दिया है।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : मैं दूसरे वक्ता का नाम ले लूंगा।

...(<u>व्यवधान</u>)

माननीय सभापति : दानिश अली जी, मैं अगला नाम पुकारूंगा।

...(<u>व्यवधान</u>)

माननीय सभापति : नो।

…(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : सभापति महोदय, तिरंगा यात्रा की बात इन्होंने शुरू की है।… (व्यवधान)

माननीय सभापति : सत्यपाल सिंह जी।

…(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : सभापति महोदय, मैंने अभी अपनी बात शुरू की है।… (व्यवधान)

माननीय सभापति : नो, नो।

…(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : सभापति महोदय, …(व्यवधान)

माननीय सभापति : आपकी कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है।

…(व्यवधान)…*

माननीय सभापति : Nothing is going on record.

… (*Interruptions*)…*

माननीय सभापति : आप बैठ जाइए।

…(व्यवधान)

[کنور دانش علی (امروہہ): محترم چیرمین صاحب، کیونکہ آپ نے مجھے*رول 193پر کھیل اور یوا منترالئے کے معاملے پر ہو رہی بحث میں بھاگ لینے کا موقع دیا۔ ابھی مجھ سے پہلے ہمارے سینئر ساتھی، نشی کانت دوبے جی نے بہت اچھی باتیں کہیں کہ کس طرح سے ہمیں کھیلوں کو آگے بڑھانا چاہئیے۔

جناب، یہ سچائی ہے کہ اس ملک میں جو فیڈریشن کا رول ہے، اور سرکار کا رول ہے، اس میں کئی جگہ کنٹراڈِکشنس ہیں۔ مجھے یہ کہنے میں کوئی گُریز نہیں ہے کہ نیپوٹِزم کئی

ساری فیڈریشنس میں ہے۔ یہ ریکارڈ پر ہے۔ سپریم کورٹ تک میں یہ معاملے گئے، لیکن اس کا کوئی حل نہیں نکلا ہے۔ ایک طریقے سے فیڈریشنس کے اوپر جو لوگ بیٹھے ہیں، ہم کافی وقت سے ریفارمس کی بات سُنتے آ رہے ہیں، لیکن کتنا ہوا، کتنا ہو پائے گا، مجھے نہیں معلوم ہے۔ لیکن یہ بات حقیقت ہے کہ دیہات، گاؤں، گرامین آنچلوں سے جو لوگ آتے ہیں، ان کے اندر ٹیلینٹ کئی زیادہ ہوتا ہے۔ میں یہ ریکارڈ پر کہہ رہا ہوں کہ فیڈریشنس کے اندر جو نیپوٹِزم ہے، اگر اس کو نیوٹرلائز کرکے جتنی سہولیات ایک سیکشن کو دی جاتی ہیں، ان کے بچوں کو دی جاتی ہیں، اگر اس کی ایک چوتھائی سہولیات ان کے گاؤں، دیہات کے نوجوانوں کو دے دی جائیں تو میں سمجھتا ہوں کہ بھارت کا اولمپکس اور کامن ویلتھ گیمس میں جو ریکارڈ ہوگا، وہ کئی گُنا بڑھ جائے گا۔

انہوں نے بہت اچھی بات کہی ہے کہ آج سرکار کی طرف سے آیوجن کیا گیا، آزادی کے اس امرت مہوتسو کے اُپلکش میں ترنگا یاترا نکالی گئی۔ مجھے اس بات کی خوشی ہے کہ جنہوں نے آزادی کی سورن جینتی پر جو گولڈن سیلیبریٹ ہورہی تھی اس وقت ان کے ہیڈ کوارٹر پر ترنگا نہیں پھیرایا تھا، کم سے کم آزادی کے امرت مہوتسو پر (کاروائی میں شامل نہیں کیا گیا) ۔ جناب، آزادی کے امرت مہوتسو پر کم سے کم ترنگا پھیرایا جائے گا۔

چیرمین صاحب، میں اپنی بات کر رہا ہوں۔ (مداخلت) جناب، مجھے اپنی بات کہنے دیجیئے۔ میں نے کیا غلط کہا ہے؟ (مداخلت) اس سنگٹھن سے وزیرِ اعظم جُڑ کر آئے ہیں۔ اس سنگٹھن سے میجوریٹی اس ایوان میں بیٹھی ہے۔ میں نے کیا غلط کہہ دیا۔ (مداخلت)

چیرمین صاحب، ترنگا یاترا کی بات انہوں نے شروع کی ہے۔ (مداخلت) جناب، میں نے اپنی بات شروع ہی کی ہے۔۔ (ختم شد)]

डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत): सभापति महोदय, मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं, आपका आभार व्यक्त करता हूं कि नियम 193 के तहत युवा और खेल के बारे में यहां जो चर्चा हो रही है, इस पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया है।

कुंवर दानिश अली : सभापति महोदय,...(व्यवधान)

माननीय सभापति : आपकी कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है।

...(व्यवधान)...*

माननीय सभापति : कृपया आप बैठ जाइए।

…(व्यवधान)

माननीय सभापति : केवल माननीय सत्यपाल सिंह जी की ही बात रिकॉर्ड में जाएगी।

…(व्यवधान)

कुंवर दानिश अली : सभापति महोदय, क्या इस सदन में कोई रूल है या नहीं है?…(व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति महोदय, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि इस सदन में हम सभी लोग सरकार के स्तर पर सभी प्रकार की योजना बनाते हैं और जीवन का जो लक्ष्य है।…(व्यवधान)

माननीय सभापति : इनका कुछ रिकॉर्ड में नहीं जा रहा है। केवल सत्यपाल सिंह जी की ही बात रिकॉर्ड में जा रही है।

…(व्यवधान)…*

माननीय सभापति : आप बैठ जाइए।

…(व्यवधान)

डॉ. सत्यपाल सिंह : सभापति महोदय, हरेक व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य, शिक्षा का लक्ष्य होता है कि उनको जीवन में सुख-शांति और समृद्धि मिले। यह हर मानव का लक्ष्य होता है।…(व्यवधान) जब हम युवाओं के बारे में बात करते हैं, तो यह लिखा हुआ है कि इस देश का युवा किस प्रकार का बने, उनको सुख-शांति और समृद्धि मिले, उनको जीवन में खुशी मिले और आजादी के इस अमृत महोत्सव के समय में, 75 वर्ष होने के बाद, इस देश के यशस्वी प्रधान मंत्री जी ने देश के लिए कहा है कि इस देश को विश्व गुरु बनाना है। देश के लिए जो अगले 25 वर्ष हैं, वह अमृतकाल है। अगर इस देश में अमृतकाल है, तो हम किस प्रकार का संदेश अपने युवाओं को देना चाहते हैं, इस देश में हम किस प्रकार के नागरिक तैयार करना चाहते हैं, यह हमारे सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न है। मैं खेलों से पहले युवाओं से संबंधित अपने कुछ विचार रखना चाहता हूं। अगर हमें किसी चीज की लंबाई नापनी है, तो इस लंबाई के लिए इंच, मीटर और किलोमीटर है, हमें वजन करना है, तो हम वजन किलोग्राम, मन, क्विंटल और टन में करते हैं, लेकिन अगर हमें अपने जीवन की खुशी नापनी हो, जिसका कोई पैमाना है

या नहीं, कई बार यह प्रश्न पैदा होता है। कौन आदमी कितना खुश है, यह समाज कितना खुश है या देश कितना खुश है, इस बात का हमारे पास क्या पैमाना है? अलग-अलग फील्ड के जो शास्त्रज्ञ हैं, उनसे पूछें, जो मैनेजमेंट के गुरू हैं, जो इस विषय पर भाषण देते हैं कि आदमी के आनंद-खुशी का पैमाना क्या है?

इस बात का जवाब उनके पास नहीं है कि आदमी की खुशी का जवाब क्या हो, लेकिन जब हम लोग अपने देश की संस्कृति, जो लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है, लाखों-करोड़ों वर्ष पहले हमारे शास्त्रकारों ने इस बात का जवाब दिया कि देश के जो युवा हैं, समाज के जो युवा हैं, वे कैसा बनें, तो उन्होंने कहा- 'युवस्य साधुः, युवा अध्यापके।' वह आशिष्ट हो, दर्दिष्ट हो, बलिष्ट हो। 'तस्यम् पृथ्वीः, सर्वाभितस्य पूर्णासात्, सः एकोः मानुस्यः आनन्दः।' आनन्द की इकाई क्या है, उसे नापने का तरीका क्या है, तो उन्होंने कहा कि समाज का, देश का जो युवा होगा, वह चरित्र का धनी होना चाहिए। वह अच्छे कैरेक्टर का होना चाहिए, वह बहुत अच्छा पढ़ने वाला होना चाहिए, बहुत विद्वान और ज्ञानी होना चाहिए। इसके साथ ही, उन्होंने कहा- 'आशिष्ट हो, दर्दिष्ट हो, बलिष्ट हो।' वह दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिए। जीवन में जिसको कुछ करना है, उसको प्रगति करना है, तरक्की करना है और वह हर प्रकार से बलिष्ट होना चाहिए। वह शरीर से बलिष्ट हो, मानसिक रूप से बलिष्ट हो, आत्मिक रूप से बलिष्ट हो। वे कहते हैं कि अगर इस प्रकार का युवा ये देश, समाज तैयार करेगा, तो निश्चित रूप से न केवल भारत वर्ष में, बल्कि पूरी दुनिया में, सापितस्य पूर्णासात्, जिसे कहते हैं कि पृथ्वी पर कितना आनन्द है, सः एकोः मानुस्यः आनन्दः, वह आनन्द की एक इकाई है। इस देश के अन्दर और दुनिया के अन्दर हम सब प्रकार की योजनाएं बनाते हैं, प्लानिंग करते हैं, लेकिन क्या हमारे पास मानव-निर्माण की योजना है या नहीं, इसके बारे में हम लोग बहुत कम विचार करते हैं। हमारी शिक्षा कैसी हो, हमारे खेल कैसे हों, क्या हम अपने देश में इस प्रकार के युवा, इस प्रकार के मानव का निर्माण कर सकते हैं? मुझे लगता है कि खेल और युवा मामले के माननीय मंत्री जी को भी इस विषय में ध्यान देने की जरूरत है। हमें किस प्रकार के युवा चाहिए, उनके लिए किस प्रकार की शिक्षा चाहिए, उनके लिए किस प्रकार का माहौल चाहिए? मैं कई बार कहता हूँ कि अगर पढ़े-लिखे लोग बार-बार बीमार होते हैं, तो मुझे डाउट होता है कि वे कितने पढ़े-लिखे हैं। अगर हम अपने आपको स्वस्थ नहीं रख सकते हैं, क्या हमारे बच्चों को आज सिखाया जाता है कि हम स्वस्थ कैसे रहें? स्वस्थ रहने के लिए केवल खेल जरूरी नहीं है, मात्र एक्सरसाइज जरूरी नहीं है। केवल इनसे ही कोई स्वस्थ नहीं रह सकता है। खेल भी जरूरी है,

लेकिन स्वास्थ्य के लिए और बहुत-सी बातें जरूरी हैं। हमें इस बात के लिए ज्यादा रिसर्च करने की जरूरत नहीं है, हजारों-लाखों वर्षों से जो रिसर्च होते आए हैं, हमारे देश के ऋषि-मुनि जो रिसर्च करते आए हैं, उन्होंने जो लिखा है, हमारे ऋषि-मुनियों की एक-एक बात, जिसे कहते हैं- उपदेशो शब्द:। उनकी एक-एक शब्द सत्य था क्योंकि वे मजाक में भी कभी झूठ नहीं बोलते थे। उन्होंने जो कुछ लिखा, वह न केवल भारतवर्ष के लिए लिखा, बल्कि सारी मानवता के लिए लिखा। उन्होंने लिखा कि अगर स्वस्थ रहना है, तो उसके लिए तीन बातें बहुत जरूरी हैं। हम लोग किस प्रकार का खाना खाएंगे, किस प्रकार से सोएंगे और जागेंगे और हम लोग किस प्रकार का व्यायाम करेंगे। इसलिए हम लोग जब खेलों के बारे में बात करते हैं, तो मैं अपने आदरणीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी का भी धन्यवाद करता हूँ, उनका आभार व्यक्त करता हूँ कि जब से वे प्रधानमंत्री बने हैं, इस देश में खेल के लिए एक नये प्रकार का वातावरण, एक नये प्रकार की परिस्थिति तैयार हुई है। हम लोग 'खेलो इंडिया' के माध्यम से गांव-गांव और प्रदेश-प्रदेश जा रहे हैं। अभी कुछ दिनों पहले प्रत्येक सांसद ने अपने संसदीय क्षेत्र में सांसद खेल प्रतियोगिता का अयोजन किया।

माननीय सभापति महोदय, जो सांसद निधि होती है, मैंने कहा है कि इस बार मेरी पूरी सांसद निधि मेरे लोक सभा क्षेत्र बागपत में केवल खेलों के ऊपर खर्च की जाए।

मैं कह रहा था कि खेलों के बारे में हम लोग करें तो क्या करें। जैसा कि हमारे श्री निशिकांत दुबे जी कह रहे थे कि इस प्रकार की एक नीति बनाने की जरूरत है, हमारे बहुत-से ऐसे बच्चे हैं, जो शहरों में नहीं आ पाते, वे गांवों में ही रहते हैं, हमारी जो योजनाएं हैं, वे उन तक पहुंच नहीं पाती हैं, उनको इसके बारे में मालूम नहीं चल पाता है। लेकिन टैलेंट का जो स्काउटिंक करना है, उसको पता है कि यह कैसे किया जाए। इसलिए गांवों में यह पता करने के लिए हरेक गांव में, जिस क्षेत्र में जो भी खेल लोकप्रिय है, उसके अन्दर प्रतियोगिता ऑर्गेनाइज की जाए, तो निश्चित रूप से जब वहाँ के बच्चे उसमें भाग लेंगे, तो वे निखरकर आएंगे, जिससे आगे चलकर वे निश्चित रूप से उसमें आगे बढ़ेंगे।

मैं यह कहता हूं कि खेल एक ऐसी चीज है, जो स्वास्थ्य भी देती है, सम्मान भी देती है और आजकल के जमाने में वह रोजगार भी देती है, स्टेटस भी देती है। इसलिए आजकल के बच्चों में इस बात के प्रति भावना उत्पन्न करना आवश्यक है, ताकि वे

अच्छे खिलाड़ी बन सकें। इसके लिए हम लोग एक विशेष नीति तैयार करें, जिससे विशेष रूप से जो इंटीरियर एरियाज हैं, जो ग्रामीण एरियाज हैं, जो तथाकथित आदिवासी और वनवासी एरियाज हैं, हम वहां के बच्चों को किस प्रकार खेलों की ओर लेकर आएं, इस बात के बारे में विचार करने की हमें बहुत जरूरत है।

मुझे याद आता है, कई वर्ष पहले मैंने पढ़ा था कि जर्मनी में साल भर में एक ऐसा दिन आता है, जब पूरी जर्मनी के लोग, बच्चे से लेकर बूढ़े तक, हर कोई उस दिन दौड़ लगाता है। पूरा का पूरा देश दौड़ लगाता है, इससे जर्मनी के अंदर खेलों के बारे में सब लोगों में बहुत अच्छी भावना पैदा हुई। हमारा राष्ट्रीय खेल हॉकी है, लेकिन आजकल के जमाने में क्रिकेट और दूसरे खेलों का बहुत महत्व बढ़ गया है। हर एक खेल का महत्व है, लेकिन हमारा जो राष्ट्रीय खेल है, जिसे हम हॉकी कहते हैं या तो हम उस राष्ट्रीय खेल का नाम बदलें और दूसरे किसी खेल का नाम रखें। अगर हम हॉकी को अपना राष्ट्रीय खेल मानते हैं, तो हॉकी को भी गांव-गांव तक पहुंचाने की जरूरत है। उसके बारे में हमें निश्चित रूप से एक योजना बनाने की जरूरत है।

सभापति महोदय, मैं एक और निवेदन करना चाहता हूं। मेरा लोक सभा क्षेत्र बागपत है। खेलों के बारे में, विशेष रूप से शूटिंग के क्षेत्र में पूरे देश को लगभग 50 प्रतिशत बच्चे अकेला बागपत देता है। माननीय मंत्री जी को भी शायद इस बात का आलोक होगा कि शूटिंग के खेल में मेरे क्षेत्र से इतने बच्चे आते हैं। मैं भी 25-30 वर्षों से शूटिंग के क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूं। बागपत छोटा सा जिला है, वहां कुश्ती में छ: अर्जुन अवॉर्डीज हैं। हमारे यहां बॉलीबॉल, बॉस्केटबॉल और आर्चरी है। पूरे देश के अंदर आर्चरी के, जिसमें धनुष-बाण सिखाते हैं, शायद उसके दो सेंटर्स होंगे, जिनमें से एक सेंटर हमारे यहां बागपत में है। ... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपके यहां शूटिंग में दादी भी हैं।

... (<u>व्यवधान</u>)

डॉ. सत्यपाल सिंह : हां सर, शूटिंग में दादी भी हैं, आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं। बच्चों से लेकर बूढ़ों की उम्र तक, दादी की उम्र तक, सब लोग शूटिंग में पार्टिसिपेट करते हैं, प्रतिभागी बनते हैं। वहां इसका माहौल है और जगह-जगह स्कूल-कॉलेजों के अंदर इस प्रकार के शूटिंग रेंज बने हुए हैं। इन खेलों के देश भर में एथलीट्स हैं,

लेकिन हमारे बच्चों के पास कोई सुविधा नहीं है। इसलिए, बागपत के बच्चे ज्यादातर हरियाणा जाते हैं, पंजाब जाते हैं और वहां जाकर प्रशिक्षण/ट्रेनिंग लेते हैं।

पिछले कई वर्षों से, जब से मेरे क्षेत्र के लोगों ने अपना आर्शीवाद देकर मुझे यहां, संसद में भेजा है, मैं इस बात की मांग करता रहा हूं कि बागपत के अंदर एक राष्ट्रीय खेल संस्थान बनाया जाए, वहां राष्ट्रीय खेल संस्थान बनाए जाने की जरूरत है। यह केवल बागपत के लिए ही काम नहीं आएगा, आसपास का हरियाणा का जो क्षेत्र है, उसके भी काम आएगा। आसपास के जो जिले हैं, उनके लिए भी काम आएगा। आपने मुझे बोलने का जो मौका दिया है, उसमें मैं अपने प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी और देश के माननीय प्रधान मंत्री जी का भी आभार व्यक्त करता हूं कि हमारे प्रदेश की सबसे पहली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी, सभापति जी, आपके यहां मेरठ में बन रही है। इसके लिए मैं आपका भी अभिनंदन करता हूं, उसमें आपका भी प्रयत्न रहा है। मैं उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री जी का भी अभिनंदन करता हूं कि मेरठ में एक स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बनाई जा रही है। मैं ऐसे ही खेल संस्थान की बागपत के लिए भी मांग करता हूं कि वहां भी एक ऐसा संस्थान बनाया जाए। आपने सुना होगा, डॉ. निशिकांत दुबे जी कह रहे थे कि 130 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में हम लोगों को जो मेडल्स मिलते हैं, जो पदक मिलते हैं, क्या उनसे हम सैटिस्फाइड हैं, संतुष्ट हैं? कोई भी उनसे संतुष्ट नहीं हो सकता। छोटे-छोटे देश, जिनकी जनसंख्या एक-दो करोड़ है, वे हमसे ज्यादा पदक लेते हैं। इसके पीछे क्या कारण है? मैंने इसके बारे में जानने की कोशिश की है। इसका कारण है कि वहां बच्चों को पांच-छ: साल की उम्र से ही खेलों में डाला जाता है, उनका कैरियर बनाया जाता है, सरकार उस पर खर्च करती है, समाज उस पर खर्च करता है और परिवार उन बच्चों पर ध्यान देता है। इसलिए मुझे लगता है कि हम लोगों को भी इस विषय पर ध्यान देने की जरूरत है। सभापति महोदय, मैं पुन: आपको धन्यवाद देता हूं। मैं एक बात कहकर अपनी बात को समाप्त करता हूं। मैं चूंकि पुलिस में रहा हूं, इसलिए मैं कई बार इस बात को क्वोट करता हूं कि दिल्ली-मुंबई जैसे बड़े-बड़े शहरों के अंदर या मेरठ जैसे छोटे शहरों के अंदर जितने मर्डर्स, जितनी हत्याएं होती हैं, उनसे लगभग छ: गुना आत्महत्याएं होती हैं।

सभापति जी, इसका मतलब यह है कि हम लोग इसमें असफल हो गए हैं कि हम अपने बच्चों को यह सिखा नहीं पाए कि इस मानव जीवन की क्या कीमत है। ऐसा भी नहीं है कि केवल अनपढ़ लोग ही आत्महत्या करते हैं, पढ़े-लिखे लोग डाक्टर्स,

इंजीनियर्स आदि पढ़े-लिखे लोग भी आत्महत्या करते हैं। आज युवा एवं खेल मंत्रालय को इस बात पर सोचने की आवश्यकता है कि हमारे युवा क्यों आत्महत्या करते हैं। यदि उन्हें जरा-सी टेंशन हो जाए, तो वे आत्महत्या कर लेते हैं।

इन आत्महत्याओं और अपराध से लोग बचें, इसके लिए कुछ करने की जरूरत है। जैसा मैंने कहा था कि हमारे पास हर प्रकार की योजनाएं हैं। हमारे पास स्कूल, रोड, अस्पताल, अच्छी बिल्डिंग्स बनाने की योजनाएं हैं लेकिन मानव निर्माण करने की योजना हमारे पास नहीं है। हम मानव निर्माण की योजना बनाएं और एक अच्छा नागरिक, एक अच्छा युवा कैसे तैयार कर सकें, इस विषय पर हमें बहुत गंभीर विचार करने की जरूरत है।

सभापति जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका विशेष आभार व्यक्त करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री विजय कुमार (गया): सभापति जी, नियम 193 के तहत भारत में 'खेलो इंडिया' के अंतर्गत खेलों के संवर्द्धन के लिए उठाए गए कदमों पर हो रही चर्चा में भाग लेने के लिए मैं अपनी पार्टी की तरफ से समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। महोदय, आज खेल के बारे में कई साथी बोल रहे थे। इस विषय के संबंध में मैं अपनी बात रखना चाहता हूं। भारत सरकार, माननीय प्रधान मंत्री जी ओलम्पिक खेलों के दौरान सभी खिलाड़ियों के निरंतर सम्पर्क में रहे और इसका परिणाम हुआ कि भारत ने खेलों में मैडल जीते। बिहार में माननीय नीतीश जी ने भी खेलों को बढ़ावा देने के लिए हर ब्लॉक में स्टेडियम बनाने का संकल्प लिया और बना भी रहे हैं। आज खिलाड़ियों के सम्मान के संबंध में माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो कदम उठाए हैं, वे काफी सराहनीय हैं और उसका परिणाम यह रहा कि वे अच्छी तरह खेले तथा उनका मान-सम्मान भी बढ़ा। खिलाड़ियों ने काफी उत्साह से ओलम्पिक खेलों में भाग लिया और काफी मैडल जीतकर आए। हाल ही में जो खेल हुए हैं, उनका भी अच्छा रिजल्ट रहा है। कई खिलाड़ी अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाए, लेकिन उनके साथ भी माननीय प्रधान मंत्री जी संपर्क बनाए रहे कि वे फिर से बिना किसी दबाव के खेलें और बेहतर प्रदर्शन करें। इसका परिणाम हुआ कि प्रधान मंत्री जी के आशीर्वाद से खिलाड़ी मैडल जीतकर आए। महोदय, कई साथी लोकल खेलों के बारे में बता रहे थे। बिहार में भी कई ऐसे खेल हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी खेले जाते हैं और उन खेलों में बहुत अच्छा प्रदर्शन खिलाड़ियों का रहता था। ऐसे खेलों में किसी प्रकार की प्रतिद्वंदिता नहीं होती है, चाहे

उनमें कैसे भी संबंध हों। लेकिन जब खेल की बात आती है तो सभी एकजुटता के साथ खेलते हैं। जब हम छोटे-छोटे थे तब कबड्डी, गुल्ली डंडा आदि खेल बहुत प्रचलित थे। हमने हाल ही में अपने संसदीय क्षेत्र गया में फुटबाल टूर्नामेंट कराया था और बहुत अच्छा रहा। हम बहुत गरीब परिवार 'माझी' से आते हैं। हमारा बहुत पिछड़ा समाज है। उन्होंने भी बहुत अच्छा खेला और उसका परिणाम भी अच्छा रहा। हम चाहते हैं कि खेलों को बढ़ावा देने के लिए माननीय प्रधान मंत्री जी जैसे खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते रहते हैं, उसी तरह से 'खेलो इंडिया' को केंद्र ही नहीं, बल्कि सभी राज्यों को इसमें शामिल करते हुए जो ग्रामीण क्षेत्र में खिलाड़ी हैं, जो अच्छा खेलते हैं, उन्हें मान-सम्मान देने की आवश्यकता है, उन्हें प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

जो ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ी हैं, उनको शहर में जाने के बाद प्रशिक्षण लेना पड़ता है और काफी खर्च होता है तथा उसको कम संसाधन मिलते हैं। अत: मैं चाहता हूं कि हर जिले में संसाधन मुहैया कराए जाएं, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ी खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहित हों और हम तथा भारत उसका लाभ उठाए। चूंकि भारत एक ऐसा देश है, जिसकी संस्कृति और विचाराधारा खेल के प्रति अच्छी है और मैं समझता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी की जो सोच है, उससे काफी फायदा हुआ है और हमारा देश काफी आगे बढ़ा है। आज जो चर्चा होती है कि भारत खेल में काफी पीछे है, अगर आज से 50-60 साल पहले खेल को बढ़ावा मिलता, पूरी दुनिया में भारत एक नंबर पर रहता और माननीय मोदी जी के नेतृत्व में आज भी भारत आगे बढ़ रहा है और निश्चित तौर पर और भी आगे बढ़ता रहेगा। चाहे खेल हो, चाहे विकास हो, चाहे रोड का मामला हो, आधारभूत संरचना हो, भारत आगे बढ़ रहा है और आगे बढ़ता रहेगा। इन शब्दों के साथ मैं अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका अत्यंत आभारी हूं कि नियम-193 के अंतर्गत भारत में खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए, खिलाड़ियों के संवर्द्धन के लिए तथा किस तरह से दुनिया की पदक तालिका में हम भारत को सर्वोच्च स्थान दिला सकें, इस महत्वपूर्ण चर्चा में भाग लेने हेतु आपने अवसर दिया। महोदय, आज इस सदन में स्पोर्ट्स पर चर्चा हो रही है और स्पोर्ट्स की चर्चा में भाग लेते हुए हमारा आज नैतिक दायित्व और कर्तव्य बनता है कि हम केवल देश के खिलाड़ियों के बारे में, खेल के प्रोत्साहन के बारे में बात करें, लेकिन उससे इतर बातें हुईं। मैं भी स्पोर्ट्समैन रहा हूं और मुझे भी इस बात का दुख है। मैं यह कहना चाहता हूं कि पिछले दिनों ओलंपिक, कॉमनवेल्थ गेम्स या किसी भी टूर्नामेंट में कब टीम जाती

थी, कब लौट आती थी, शायद देश को इस बात का अहसास भी नहीं होता था, लेकिन अगर आज हम भारत के सर्वोच्च सदन में खेलों के प्रोत्साहन पर चर्चा कर रहे हैं, तो यकीनन यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। जहां हम और खेलों को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं, वहीं अभी कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत के खिलाड़ियों ने अब तक 13 मेडल हासिल किए हैं। मैं इस सदन के माध्यम से उन खिलाड़ियों को बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं। भारत को 5 गोल्ड मेडल, 5 सिल्वर मेडल और 3 ब्राँज मेडल कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में अभी तक प्राप्त हुए हैं। महोदय, यह ऐसे नहीं होता है। सदन में कही गयी यह बात बिल्कुल सही है कि दुनिया के दूसरे देशों में बचपन से ही टैलेंट की खोज होती है और उस टैलेंट सर्च के बाद बच्चों का ट्रॉयल होता है, जिसके बाद सरकार उनकी सारी जिम्मेदारी लेती है, उनको कोचेज देती है, उनकी ट्रेनिंग, पढ़ाई-लिखाई, खेल आदि का सारा जिम्मा लेती है, तब जाकर वे दुनिया में स्थान बना पाते हैं। यह बिल्कुल सच बात है और यह काम हमारे यहां नहीं हुआ था, जिसके कारण हमारे देश के खिलाड़ी, जो दुनिया में ऊंचा स्थान पा सकते थे, वे नहीं पा सके। मैं अपनी सरकार को धन्यवाद दूंगा कि हमारी सरकार वर्ष 2014 में आयी और प्रधान मंत्री जी द्वारा वर्ष 2017 के बाद से चाहे खेलो इंडिया प्रोग्राम की बात हो, चाहे फिट इंडिया मूवमेंट की बात हो, चाहे स्पेशल अवार्ड्स की बात हो, चाहे मेरिटोरियस स्पोर्टसमेन को पेंशन देने की बात हो, चाहे नैशनल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट फंड बनाने की बात हो, चाहे स्पोर्ट्स ट्रेनिंग सेंटर्स हों, ये सारे फैसले लिए गए, जिसके कारण आज हमें स्पोर्ट्स में टोक्यो ओलंपिक में गोल्ड भी मिला है, जिस पर पूरा भारत अपने-आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। अत: मैं कहना चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में स्पोर्ट्स मंत्रालय ने यह परंपरा शुरू की है। आजादी के बाद वर्ष 2017 में पहली बार हमारी सरकार ने स्पोर्ट्स टैलेंट सर्च पोर्टल लाँच किया।

अगर कोई लड़का, कोई यूथ, कोई खिलाड़ी होनहार है, देश के किसी भी क्षेत्र का है, नॉर्थ-ईस्ट से लेकर साउथ, कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक किसी भी गाँव में वह खिलाड़ी है, अगर उसके पास पैसे का अभाव है, क्योंकि ऐसा नहीं है कि टैलेंट किसी पर्टिकुलर, खास के यहाँ होता है, वह गरीब के घर में, कुटिया, झोंपड़ी में भी टैलेंट होता है। उस टैलेंट को भी तराशने का काम करने के लिए वर्ष 2017 में हमारी सरकार ने स्पोर्ट टैलेंट सर्च पोर्टल लाँच किया और यह कहा कि जो बेस्ट टैलेंट है, वह अपने को उस पोर्टल पर रजिस्टर करे।

हमारे यूथ, खिलाड़ी, यंगस्टर अपने को उस पोर्टल पर रजिस्टर करें और अपलोड करें। उसके बाद उनको शॉर्ट लिस्ट किया जाएगा, शॉर्ट लिस्ट करने के बाद उनका ट्रॉयल होगा और ट्रॉयल के बाद जब वे क्वालिफाइड हो जाएंगे तो उस खिलाड़ी के ऊपर आने वाले सारे खर्च को भारत सरकार और साई, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया वहन करेगी। यह हमने भी शुरू कर दिया है। यकीनन, कम से कम जो चिंता हमारे सदन की है कि अगर दुनिया के दूसरे देशों में यह हो रहा है, जिन लोगों में टैलेंट है, उस टैलेंट के आधार पर उनको सरकार पैसा देती है, उन पर पैसा खर्च करती है और आप चिंता की बात करते हैं, यहाँ तो जब ओलंपिक खेल आते थे, कॉमनवेल्थ खेल आते थे, वर्ल्ड गेम्स होते थे, तो तैयारी होती थी, सारी एसोसिएशंस के द्वारा जल्दी-जल्दी टीमें तय होती थीं। लास्ट मूवमेंट तक टीम का सिलेक्शन नहीं हो पाता था, टीम भेजने की कोई तैयारी नहीं होती थी। आज हमारी सरकार, जिसने एक एम्पावर्ड स्टीरिंग कमेटी बनाई है। आखिर एम्पावर्ड स्टीरिंग कमेटी का क्या रोल है? तमाम विद्वान लोग यहाँ बैठे हुए हैं। वर्ष 2017 में हमने यह कमेटी इसलिए बनाई कि हमें केवल वर्ष 2021 के उस टोक्यो ओलंपिक की चिंता नहीं थी, हमें वर्ष 2024 में पेरिस में होने वाले ओलंपिक की भी चिंता है। वर्ष 2028 में जब लॉस एंजेल्स में ओलंपिक्स होंगे, हमें उसकी भी चिंता है। यकीन कीजिए यह एम्पावर्ड स्टीरिंग कमेटी यह देखेगी कि कैसे उन खिलाड़ियों को प्रीपेयर किया जाए, उन खिलाड़ियों को किस तरीके से तैयार किया जाए, एक टास्क फोर्स बनाकर के उनके लिए फार रीचिंग प्रिपरेशन करने की, पावरफुल पार्टिसिपेशन की कि किस तरह से हमारे इंडियन प्लेयर्स पावरफुल पार्टिसिपेशन कर सकें, मैं खेल मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूँ कि पहली बार इस तरह की एम्पावर्ड स्टीरिंग कमेटी बनी। इसका नतीजा यह हुआ कि पहली बार हमने टोक्यो ओलंपिक में इस तरह का प्रदर्शन किया। हमने पहली बार एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक हासिल किया। आपने देखा कि टोक्यो में हमारे 7 मेडल आए, जिसमें एक स्वर्ण पदक, दो रजत पदक और चार कांस्य पदक शामिल थे। उसके बाद पैरालम्पिक हुआ। जहाँ हमें ओलंपिक में 7 मेडल मिले, वहीं टोक्यो के पैरालम्पिक में इंडिया ने अपना एक उच्चतम रिकॉर्ड बनाया, हम कुल 19 मेडल लेकर आए हैं। पूरा देश गौरवान्वित है। मैं एक बार फिर अपनी सरकार को बधाई देना चाहता हूँ, अपने खेल मंत्रालय द्वारा उठाये गए कदमों के लिए। ऐसा इसलिए हुआ कि हमने बजट भी बढ़ाया है। हमने इस बात को सुनिश्चित भी किया है कि उस बजट का यूटिलाइजेशन भी हो। आप पिछले 5 सालों का देख सकते हैं। मैं केवल खेल तक सीमित रहूँगा। During the

last five years, government has allocated Rs. 12,788 Crore. 12,788 करोड़ रुपया केवल इन खिलाड़ियों के लिए भारत सरकार ने फंड एलोकेट किया और इस बात का हमें संतोष है कि पहले फंड एलोकेट हो जाता था, लेकिन उन खिलाड़ियों तक पैसा दिया नहीं जाता था और वह पैसा मिलने के बावजूद भी जो उनको सही मायने में फायदा नहीं होता था। आये दिन रोज अखबारों में शिकायत आती थी कि उनकी ट्रेनिंग हो रही है, उनकी जितनी कैलोरीज़, जितना उनका फूड न्यूट्रिशंस होना चाहिए, उतना उनको मिलता भी नहीं था। आज संतोष का विषय है कि अगर 12,788 करोड़ रुपये हमारी सरकार ने एलोकेट किया तो उसमें से 11,482 करोड़ रुपये उन खिलाड़ियों पर खर्च किया, जो ओलम्पिक्स में मैडल लेकर आ रहे हैं या कॉमनवेल्थ गेम्स में लेकर आ रहे हैं।

कोचेज़ की बात आई, आप देखिए कि 615 कोचेज़ रेगुलर बेसिस पर अपाइंट किए गए। आप पहले जिलों के स्टेडियम्स में जाते थे, हम सांसद हैं, तो हमसे कहते थे कि स्वीमिंग का कोई कोच नहीं है, हॉकी का कोच नहीं हैं। हम लोग भी हॉकी और फुटबाल में इंटर यूनिवर्सिटी खेले हैं। हम लोगों को भी कोचेज़ का अभाव रहता था। किस तरह से बचपन में डंडे से शुरू करके किस तरह से खिलाड़ी बनते थे।

आज खुशी है कि अगर उस खिलाड़ी में हुनर है, हम इस बात की चिंता कर रहे हैं कि उनको तराशने का काम हमारा खेल मंत्रालय करेगा और खेल मंत्रालय उसके लिए देश और दुनिया के जो अच्छे से अच्छे कोचेज हैं, उनको वर्ष 2024 और 2028 के लिए रेगुलर बेसिस पर नियुक्त करने का काम कर रहा है। उसका नतीजा है कि 615 कोचेज़ रेगुलर बेसिस पर अपॉइंट हुए हैं और 416 कोचेज़ कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर हुए हैं। आज सभी स्टेडियमों में कोचेज़ दिए जा रहे हैं। आज स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया का रिक्रूटमेंट का एक पर्पज है कि एथलीट्स को जिस टाइप का भी सपोर्ट हो सके, उनको सारा सपोर्ट दिया जाए। इंटरनेशनल लेवल पर जो कम्पीटिशन हो रहे हैं, चाहे वर्ष 2024 के ओलंपिक हो या वर्ष 2028 के हो, इस सदन में कभी यह चर्चा हुई कि किसी सरकार ने अभी एक ओलंपिक्स खत्म न हुआ हो और दूसरे ओलंपिक्स की तैयारी शुरू कर दे, तो यह काम यूएसए करता था, यह काम रूस करता था और यह काम चाइना करता था। आज वह काम जो यूएसए, रूस और चाइना कर रहा है, मैं आज कह सकता हूं कि वह काम भारत सरकार भी कर रही है और हम भारत के खिलाड़ियों के लिए वर्ष 2024 और 2028 की तैयारी के लिए काम कर रहे हैं। यही नहीं, आप स्पोर्ट्स का बजट देखिये। वर्ष 2022-23 का जो बजट है, हमने उस बजट

को इंक्रीज किया और इस बार 3062.60 करोड़ रुपये स्पोर्ट्स का बजट बढ़ाया है। पिछले साल 2752 करोड़ रुपये का बजट था। रोज इस बात की चिंता सदन में होती थी, चाहे सत्ता पक्ष के हों या प्रतिपक्ष के हों, इस बात की चिंता होती थी कि हम सड़क के लिए बजट दे रहे हैं, हम और विभागों के लिए बजट दे रहे हैं, लेकिन जो खिलाड़ी हैं, उन खिलाड़ियों के लिए हमारा बजट कम होता जा रहा है। आज हमारी सरकार लगातार इस बजट को बढ़ाने का काम कर रही है। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि आज जिस तरीके से इस ट्रेनिंग सेंटर को स्थापित करके, पिछले आठ सालों में हमारे उन खिलाड़ियों को लगातार पांच लाख रुपये पर-ईयर दिए जा रहे हैं, जिससे कि हम उनको दुनिया की उन तमाम प्रतिस्पर्धाओं में ले जा सकें। वर्ष 2014 में प्रधान मंत्री मोदी जी ने शपथ ली और सरकार बनी। उनको देश की, खेत-खलिहान, गांव के गरीबों और किसानों की चिंता थी। भारत की पार्लियामेंट की दहलीज पर उन्होंने कहा कि हमारी सरकार गरीबों के लिए समर्पित है, मज़लूमों के लिए समर्पित है। उन्होंने उसी समय 'खेलो इंडिया' प्रोग्राम को लॉन्च किया। यह अपने आप में एक रिवॉल्यूशन था। उन्होंने स्पोर्ट्स कल्चर को पैदा किया और खेल की संस्कृति को बदलने का काम किया तथा रिवाइव करने का काम किया। भारत के गांवों में, जिलों में तथा हरियाणा और पंजाब में स्टेडियम थे, इंटरनेशनल स्टेडियम भी थे। आज आपने स्वयं मेरठ की बात की है। इसी तरीके से नॉर्थ ईस्ट और यूपी में यूनिवर्सिटी बन रही है। आज उन टैलेंटेड प्लेयर्स को फाइनेंशियल सपोर्ट्स की जरूरत थी, उनको ट्रेनिंग की जरूरत थी।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप कन्क्लूड कीजिए।

श्री जगदम्बिका पाल : महोदय, आपने किसी को नहीं कहा और आप हमें कह रहे हैं। मैं कन्क्लूड कर रहा हूं। मैं जल्दी-जल्दी पॉइंट्स को कह देता हूं। इसके बाद फिट इंडिया मूवमेंट आया।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आपके पास ज्ञान का भंडार रहता है इसलिए थोड़ा सा कहना पड़ता है।

... (<u>व्यवधान</u>)

श्री जगदम्बिका पाल : फिर उसके बाद प्रधान मंत्री जी 29 अगस्त, 2019 को फिट इंडिया मूवमेंट लेकर आए। जब आप एक तरफ कहेंगे कि सरकार ने खेल के लिए

क्या किया है, तो मैं सिलसिलेवार बताना चाहता हूं। मैं कोई राजनीतिक बात नहीं कर रहा हूं।

माननीय सभापति : माननीय सदस्य और भी बोलने वाले हैं।

श्री जगदम्बिका पाल : 29 अगस्त, 2019 को फिट इंडिया मूवमेंट पर प्रधान मंत्री जी का मेन फोकस था। उन्होंने एक मूवमेंट के रूप में कहा कि इसके लिए एक अवेयरनैस हो। मैं योगा की बात नहीं कर रहा हूं। उसको पूरी दुनिया ने स्वीकार कर लिया है। जिस तरीके से प्रधान मंत्री जी ने फिटनैस पर ध्यान दिया, ऐसा नहीं है कि केवल खिलाड़ियों पर ध्यान दिया, हम लोग भी फिट रहे, कॉमनमैन फिट रहे, इम्यूनिटी पावर बढ़े। आज पूरी दुनिया में कोविड में अगर सबसे ज्यादा इम्यूनिटी पावर थी तो भारत के लोगों की थी। यूएसए की 24 करोड़ आबादी जिस तरह कॉलैप्स के वर्ज पर थी, आज 135 करोड़ की आबादी में हमने सबसे अच्छा काम किया है। यह इसलिए, क्योंकि हमारी जो डेली लाइफ थी या जिस तरीके से हम लोग काम करते थे, यह उसकी वजह से है। फिर स्पेशल अवार्ड्स देने की बात कही कि जो इंटरनेशनल स्पोर्ट्स इवेंट्स में होंगे, उनके कोचेज़ होंगे। उन सब को हम स्पेशल अवार्ड्स देंगे। उसका नतीजा है कि ये मैडल मिल रहे हैं। आज उन बच्चों के टैलेंट्स को पहचान कर उनकी कोचिंग हो रही है। आज हम हर स्टेट में उनको हॉकी, फुटबॉल तथा अन्य स्पोर्ट्स के होस्टल में रख रहे हैं।

प्रधान मंत्री जी ने जिस तरह से नॉर्थ-ईस्ट पर, लुक ईस्ट पर फोकस दिया, हमारे मंत्रीगण बैठे हैं, उन्होंने कहा कि हर मंत्री महीने में एक बार नॉर्थ-ईस्ट जाएग। ये कभी नॉर्थ-ईस्ट की तरफ ख्याल करते थे? यह मैं सच्चाई कह रहा हूँ, कोई राजनीतिक बात नहीं कह रहा हूँ। जिस तरीके से नॉर्थ-ईस्ट में टैलेंट है, आज नॉर्थ-ईस्ट के लोग जिस तरीके से चाहे ओलम्पिक्स हो, चाहे कॉमनवेल्थ गेम्स हों, वे मेडल जीत कर ला रहे हैं यह आज इस सरकार की देन है, उसका नतीजा है कि आज मेडल आ रहे हैं। इसी तरीके से अपने मैरिटोरियस स्पोर्ट्समैन को पेंशन देने की योजना शुरू हुई। हमने फंड बनाने का काम किया। मैं केवल उल्लेख कर रहा हूँ। इसी तरीके से स्पोर्ट्स ट्रेनिंग सेंटर बनाने की बात हुई, जो स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने किया है। इसी तरीके से मैं कहता हूँ कि Committee to address women grievances का भी गठन हुआ। कितनी महिला खिलाड़ीयां थीं, उनकी कितनी शिकायतें आती थीं। वर्ष 2017 में इंटरनेशनल विमेन डे पर प्रधान मंत्री जी ने कहा, हमारे स्पोर्ट्स एण्ड यूथ अफेयर्स

मिनिस्टर बैठे हुए हैं, हमारी सरकार ने एक Committee to address women grievances बनाई।

हमने स्कीम बनाई कि टारगेट दी ओलंपिक्स पोडियम। इसका ऑब्जेक्टिव क्या था to identify and support potential medal prospects for 2024 and 2028. इसके लिए मेन सेंटर था कि हम एथलेटिक्स में, बैडमिंटन में, बॉक्सिंग में, आर्चरी में रेसलिंग में या शूटिंग में किस तरीके से एक टारगेट कर के ओलंपिक्स पोडियम पर हमारे स्पोर्ट्स खड़े हों और जब तिरंगा लहराए, जिसको आज फहराने की बात हुई है, बाईक रैली हुई है, अगर इनको अच्छा नहीं लग रहा है तो जब इंटरनेशनल ओलंपिक्स में, टोक्यो में तिरंगा फहराता है तो इन्हें अच्छा लगे या न लगे, पूरे देश के लोग अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं, पूरे देश के लोग हर्षित होते हैं। मान्यवर, इसी तरीके से सरकार ने जो इनिशिएटिव लिया है, वर्ष 2024 और 2028 में वह भी है। इसी तरह से सरकार की अनाउंसमेंट जो वर्ष 2020 में हुई है, उन्होंने एक प्लान किया है कि हम चार सालों में 1000 नए खेलो इंडिया सेंटर बनाएंगे। आपको जान कर खुशी होगी कि 217 खेलो इंडिया सेंटर अब तक स्टैब्लिश हो चुके हैं, ओपन हो चुके हैं और आज वे उस इलाके के जो गांव के ग्रामीण खिलाड़ी हैं, उसमें खेल रहे हैं। यह खेलो इंडिया, भारत की आजादी के बाद पहली बार यह मूवमेंट आया। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी का विज़न था कि आज उसकी देन है कि हज़ारों-हज़ार खिलाड़ी उस खेलो इंडिया के माध्यम से अपने टैलेंट को निखारने का काम कर रहे हैं, तराशने का काम कर रहे हैं और आने वाले दिनों में मेडल हासिल करेंगे और भारत का सम्मान तथा गौरव बढ़ाएंगे।

इसी तरह से सरकार ने नॉर्थ ईस्ट के लिए लागू किया। उन्होंने न केवल नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों के लिए, जम्मू-कश्मीर के लिए भी, जहां के हमारे हसनैन मसूदी साहब बैठे हुए हैं। … (व्यवधान)

माननीय सभापति : प्लीज़, अब कनक्लूड कीजिए।

श्री जगदम्बिका पाल : मैं एक-दो मिनट में खत्म कर रहा हूँ।

HON. CHAIRPERSON: Now, please conclude. It has already been 16-17 minutes.

SHRI JAGDAMBIKA PAL: I will conclude within two minutes. अण्डमान निकोबार आइलैण्ड्स में अभी हम लोग हसनैन मसूदी साहब के साथ गए थे। लक्षद्वीप या लद्दाख ये सब जगहें इतनी रिमोट थीं कि दिल्ली से लगता था कि हम कहां हैं और वहां के लोगों के मन में क्या फीलिंग होती थीं। आज एक-एक डिस्ट्रिक्ट में, चाहे वह लद्दाख हो, चाहे लक्षद्वीप हो, चाहे निकोबार हो, चाहे अण्डमान हो, चाहे जम्मू-कश्मीर हो, चाहे नॉर्थ-ईस्ट हो, एक-एक डिस्ट्रिक्ट में, जहां हम इधर एक-एक खेलो इंडिया सेंटर दे रहे हैं, वहीं उन सभी जगहों पर हम दो-दो खेलो इंडिया सेंटर देने जा रहे हैं। यह हमारा तरीका है।

सभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, आपने समय दिया।

KUMARI GODDETI MADHAVI (ARAKU): Thank you very much, Sir.

I am very proud to say India is a country with a rich sports culture. Ancient sports like kabaddi and *kushti* are still popular throughout the country with regional variations. This is proof enough to say that India is a country with a rich sports culture.

I would like to specially request the hon. Minister to take special interest in encouraging sports among the tribal population in the country. Due to a variety of factors, they have a natural advantage. Not only that, because of lack of awareness and due to poor financial condition, having a sports career is an assurance for a better income among the tribal population.

Sir, I myself am a physical education teacher who had taught in the tribal areas. The sports kits and other accessories are very costly and students from the tribal community are not able to buy them. I request the hon. Minister to provide sports kits and accessories to promote the tribal students who have a future in sports.

Sir, I would like to suggest the steps to develop sports in India. The National Education Policy, 2020 offers a window of opportunity to integrate sports as a part of the curriculum in schools and colleges. Creating a network

of schools and conducting regular sports would nurture a culture of sports in students right from their childhood.

India is a land of diversity. There are various indigenous sports that are extremely popular regionally like kushti and kabaddi. By piloting a scheme like 'One State, One Sport', an indigenous or traditional sport may be identified and promoted in each State. This would also preserve the rich culture of India. In Ekavalya Model Residential Schools, it has already been planned. Providing adequate funding and creating necessary infrastructure would promote sports even in the tribal areas of the country.

Sir, there is just one National Sports University in India which is inadequate for a country of India's size. There is a need to establish two or three national sports universities in different parts of the country in order to promote sports education and research.

Andhra Pradesh is a State with a rich culture of sports, but not even a single National Centre of Excellence (NCOE) has been established by the Sports Authority of India (SAI) to promote sports in the State. I request the hon. Minister of Sports to sanction a NCOE for the State of Andhra Pradesh.

Sir, the CSR funding for the sports sector has been very low in India. The CSR spending on sports is less than two per cent of the total CSR spending in India. There is a need to encourage corporates to utilize a larger portion of their CSR funds for building sports infrastructure and supporting talent, especially in the rural areas and tribal areas.

Sir, I am myself a sports person from a tribal area. Due to lack of facilities and lack of awareness, I lost my career in sports. I studied in a Navodaya school. In that school, there is a SAI academy. Because of that academy, I am a State level player in volleyball. I also worked as a Physical Education teacher. I know the problem of the students and I know the problems of the teachers who work in tribal areas. I may like to tell the hon.

Minister that in my tribal area, the persons who get a chance to play at the State level, they are not able to go further due to lack of funding and because of their condition. I would request you to sanction special funds to develop infrastructure for sports in tribal areas. This is my special request. I would request you to consider my request.

With these words, I conclude my speech.

श्री गोपाल शेट्टी (मुम्बई उत्तर): सभापति महोदय, नियम-193 के तहत खेल के बारे में जो चर्चा यहां पर चल रही है, उस में भाग लेने का आपने मुझे अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

महोदय, मैं, देश के प्रधान मंत्री और सभी खेल मंत्रियों को विशेषकर धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने वर्ष 2014 के बाद खेल के स्तर को बहुत ऊँचा उठाया। हमारे देश के जो बच्चे हैं, उन सारे बच्चों को यह लगने लगा कि हमें भी खेल-कूद में भाग लेना चाहिए, हमारा भी कोई नाम होगा। इन दिनों बड़े पैमाने पर बच्चे खेल से जुड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। चाहे ओलम्पिक्स हो या जब भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों का आयोजन होता है तो भारत देश के बच्चे बड़े पैमाने पर मेडल्स लाते हैं। हम गौरवान्वित होते हैं कि हमारे देश को गोल्ड मिला, सिल्वर मिला, ब्राँज मिला। मैं सत्यपाल जी की बात से सहमत हूं कि भारत इतना बड़ा देश है, यह कितना बड़ा देश है, यह हमें कोरोना काल में पता चला कि 97 देशों की जितनी आबादी है, उतनी आबादी हमारे एक देश की है।

97 देशों की आबादी को जितने प्रधानमंत्री चलाते हैं, उतनी बड़ी आबादी वाले देश को हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी अकेले चलाते हैं। इसलिए, जो मेडल मिल रहा है, लोगों की संख्या की दृष्टि से वह बहुत कम है। उनकी संख्या कम है, इसलिए 'खेलों इंडिया' कन्सेप्ट के माध्यम से देश के प्रधानमंत्री जी ने बच्चों को प्रोत्साहित करना प्रारंभ किया है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज लोक सभा में इस बारे में हम चर्चा कर रहे हैं। जब मैं यहाँ अपने खेल मंत्री जी को प्रश्न काल में उतर देते हुए देखता हूँ तो वह हाथ में कागज-पेपर लिए वगैर जवाब देते हैं। इससे यह पता चलता है कि खेल के बारे में उनकी दिलचस्पी कितनी है और खेल के बारे में उनकी सोच कितनी गहरी है, यह उससे पता चलता है। हम उम्मीद करते हैं कि आने वाले दिनों में भारतवर्ष में खेल निश्चित तौर पर बहुत आगे बढ़ेगा।

महोदय, मैं एक विषय को टच करना चाहता हूँ। भारत देश में अगर क्रिकेट को अंतर्राष्ट्रीय जगत के लोगों ने कंट्रोल नहीं किया होता तो यह क्रिकेट भी इतना बड़ा नहीं हुआ होता। क्रिकेट में पैसा बहुत है। मुझे बचपन में कभी क्रिकेट खेलने का मौका नहीं मिला, लेकिन उसके बावजूद मैं पार्लियामेंट के इस हाउस में क्रिकेट को इसलिए समर्थन दूँगा, क्योंकि हमारी जो बीसीसीआई संस्था है, वह हर साल 1.5 सौ करोड़ रुपये का रेवेन्यू देश की तिजोरी में देती है। इसके बारे में मुझे पता चला है। अगर इस फीगर में कोई कमी हो तो खेल मंत्री उसको करेक्ट करेंगे।... (व्यवधान) इसमें हम शरद पवार जी से लेकर अरुण जेटली जी तक को याद करेंगे। अनुराग ठाकुर जी है, हमारे मुम्बई के आशिष शेलार जी है। ऐसे बहुत सारे लोगों ने इस संस्था के माध्यम से काम करके क्रिकेट को जीवित रखने का काम किया है। मैं कभी-कभी थोड़ा दुखी भी होता हूँ कि जब क्रिकेट का टूर्नामेंट बड़े पैमाने पर होता है तो उसको कुछ राज्य के लोग बंदी भी डालते हैं। मैं मानता हूँ कि इस पर बंदी नहीं डालना चाहिए। क्रिकेट एक बड़ा खेल है।

क्रिकेट के माध्यम से पैसा आता है, इसलिए हमें आने वाले दिनों में क्रिकेट को और प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि क्रिकेट के माध्यम से बड़े पैमाने पर भारत सरकार की तिजोरी में पैसा आए। उसके साथ-साथ मैं यह भी माँग करूँगा कि इस सेक्टर से जो भी पैसा आए, वह सारा का सारा पैसा और उसमें उतना ही ग्रांट्स केन्द्र सरकार के माध्यम से लगाकर 'खेलो इंडिया' के माध्यम से सभी राज्यों में उसका बँटवारा करना चाहिए। इससे हम खेल को आने वाले दिनों में और बड़ा कर पाएंगे।

सभापति महोदय, अगर हम सिर्फ गरीबों की बात करेंगे तो इससे गरीबों का भला नहीं होने वाला है। जिनके पास पैसा है, उनको पैसे के माध्यम से खेलने दीजिए। उनके पैसा का लाभ लेकर हम गरीबों के लिए अन्य खेलों को प्रोत्साहित करेंगे। इससे हम आने वाले दिनों में बड़े पैमाने पर खेल को ऊंचा स्तर दे सकते हैं, लेकिन इसके लिए हमें काम करना पड़ेगा।

महोदय, 'खेलो इंडिया' के माध्यम से मैं यह भी कहना चाहूँगा कि हमारा जो इंदौर है, प्रधानमंत्री जी ने 'स्वच्छ भारत' अभियान चलाया। इंदौर को पाँच बार पहला नंबर मिला है। मैं जिस मुम्बई शहर से आता हूँ। मुम्बई महानगर पालिका में मैं 15 साल कॉरपोरेटर के रूप में काम करके आया हूँ। हमारी मुम्बई महानगर पालिका इन दिनों इंदौर से कम्पीट कर रही है। मैं चाहूँगा कि अगले साल का पुरस्कार मुम्बई

महानगर पालिका को मिले। उसका सबसे ज्यादा योगदान मुझे ही मिलेगा। मैं यह चाहता हूँ कि जैसे 'स्वच्छ भारत' अभियान को प्रधानमंत्री जी ने लाकर सारे शहरों को स्वच्छता के साथ जोड़ दिया है, वैसे ही खेल से भी सारे शहरों के लोगों को जोड़ना चाहिए, ताकि गुजरात महाराष्ट्र के साथ कम्पीट करे, महाराष्ट्र कर्नाटक के साथ कम्पीट करे और राज्यों के बीच कम्पीटिशन हो। इसमें शहरों का भी कम्पीटिशन हो। मैं मानता हूँ कि आने वाले दिनों में खेल बड़े पैमाने पर तेजी से आगे बढ़ेगा और लोग भी बढ़े पैमाने पर इसके साथ जुड़ेंगे। इसमें सरकार का इन्वॉल्वमेंट होनी चाहिए। अभी सिर्फ स्पोर्ट्समैन लोगों का इन्वॉल्वमेंट है और थोड़े पोलिटिशियन लोग उनको सपोर्ट करते हैं। कुछ जगहों पर 'खेलो इंडिया' के माध्यम से काम चल रहा है। प्रधानमंत्री जी ने 'संसद खेल महोत्सव' भी आयोजित करने के लिए कहा है। हमारे जैसे बहुत सारे लोग इसे करते रहते हैं। मैं मानता हूँ कि इसमें बड़े पैमान पर सेंटर व स्टेट गवर्नमेंट और शहर के कॉरपोरेशन के लोगों की इन्वॉल्वमेंट होनी चाहिए। केन्द्र की सरकार को राज्य तथा कॉरपोरेशन से हिसाब भी लेना पड़ेगा कि आपने कितने खेलों का आयोजन किया, कितने बच्चों ने उसमें भाग लिया। यदि इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा होगी तो मैं मानता हूँ कि इसमें आने वाले दिनों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखने को मिलेगा।

सभापति महोदय, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया की भी यहाँ बात हुई। मेरे मतदान क्षेत्र में 35 एकड़ की एक जगह है, जिसमें से 3 एकड़ झोपड़पट्टी हो गई और 32 एकड़ अभी बची हुई है।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : गोपाल शेट्टी जी, आप आगे कंटीन्यू कीजिएगा। अभी चर्चा आगे जारी रहेगी।

श्री गोपाल शेट्टी : सर, जो भी आपका आदेश हो।

माननीय सभापति: सभा की कार्यवाही गुरुवार, दिनांक 4 अगस्त, 2022 को प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

18.00 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Thursday, August 04, 2022/ Sravana 13, 1944 (Saka).

-

INTERNET

The Original Version of Lok Sabha proceedings is available on Parliament of India Website and Lok Sabha Website at the following addresses:

http://www.parliamentofindia.nic.in

http://www.loksabha.nic.in

LIVE TELECAST OF PROCEEDINGS OF LOK SABHA

Lok Sabha proceedings are being telecast live on Sansad T.V. Channel. Live telecast begins at 11 A.M. everyday the Lok Sabha sits, till the adjournment of the House.

Published under Rules 379 and 382 of the Rules of Procedure and Conduct of Business

in Lok Sabha (Sixteenth Edition)

---

* Available in Master copy of Debate, placed in Library.

* Available in Master copy of Debate, placed in Library.

* Laid on the Table and also placed in Library. See No. LT 7411/17/22 and 7412/17/22 respectively.

* Laid on the Table and also placed in Library. See No. LT 7413/17/22.

* Laid on the Table and also placed in Library. See No. LT 7414/17/22.

* Laid on the Table and also placed in Library. See No. and 7415/17/22.

* Published in the Gazette of India Extraordinary, Part-II, Section 2, dated 03.08.2022.

* Treated as laid on the Table.

* Moved with the recommendation of President.

* Not recorded

* Not recorded

* The Bill was introduced on 11 December, 2019. The Bill was referred to the Joint Committee of the Houses for examination and report and the report of the Joint Committee was presented to Lok Sabha on 16.12.2021. A Statement containing reasons for which the Bill is being withdrawn has been circulated to members today (3.8.2022).

* Further discussion on the need to promote sports in India and steps taken by the Government in this regard raised by Shri Gaurav Gogoi on the 31st March, 2022 –Continued.

* Not recorded

* Not recorded

* Not recorded